उनकी प्रतिभा का समाचार कॉलेज के मालिक श्री घनश्याम दास बिरला के पास पहुंचा।

आज तक कॉलेज में किसी छात्र को इतने अंक प्राप्त नहीं हुए हैं। तुम्हें यह स्वर्ण पदक देते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता हो रही है। तुम्हें मासिक छात्रवृत्ति और दाखिला एवं किताबों का खर्च भी हमारी ओर से प्राप्त होगा। तुम जब चाहोगे, हमारे यहां अच्छी सी नौकरी भी पा सकोगे।

किन्तु ऐसा समय कभी आया ही नहीं। 1937 में उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रवेश किया। साथ ही बी.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। इसी बीच उनकी ममेरी बहन रमादेवी बहुत बीमार पड गईं।

मेरे इलाज और सेवा का भार तुम पर ही आन पडा है। तुम्हारी परीक्षा भी नजदीक है। इस तरह से रात दिन जागकर मेरी सेवा करते रहोगे तो पढाई कब करोगे?

तुम चिन्ता मत करो मैं सभी पद्धतियों से तुम्हारी चिकित्सा कराऊंगा। प्राकृतिक चिकित्सा के लिए तुम्हें पहाडों पर भी ले जाऊंगा।

पर हुआ वहीं जो ईश्वर को मंजूर था। रमादेवी बच न पायीं और दीनदयाल जी आंतरिक पीड़ा को सहते परीक्षा में भी न बैठ पाए।